प्रेम का मार्ग बतलाने के बाद, उस पर अब चलना कैसे है? इस प्रकरण में बताया है।

राग धनाश्री

एणे पगले आपण चालिए, कांई पगलां ए रे प्रमाण, सुन्दरसाथजी।
पेहेले फेरे आपण जेम नीसर्त्यिां, तमे जाण थाओ ते चित आण।
चित आणीने रंग माणो, सुन्दरसाथजी।।१।।

श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरसाथ से कहती हैं कि हम ब्रज में अपने धनी से जैसा प्रेम करते थे, वही सही मार्ग है और उसी पर हमें चलना है। पहली बार ब्रज को छोड़कर हम रास में जैसे गए, वह समझ कर उसे चित्त में धारण करो तथा आनन्द का अनुभव करो।

रास नरसैए रे न वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह।
चरण पसाय रे वालातणे, तमे सांभलो कहूं हूं तेह।।२।।

नरसैयां ने रास का वर्णन नहीं किया। इसे जानने की मेरे मन में इच्छा थी। अब वालाजी के चरणों की कृपा से मैं कहती हूं, उसे तुम सुनो।

श्री धणिए जे रे वचन कह्यां, ते में सांभलयां रे अनेक।
पण में रे मारा गजा सारूं, कांई ग्रह्या छे लवलेस।।३।।

धनीजी ने तो अनेक वचन कहे जिन्हें मैंने सुना और अपनी बुद्धि की शक्ति के अनुसार ग्रहण किया।

सरद निसा रे पूनम तणी, आव्यो ते आसो रे मास।
सकल कलानो चंद्रमा, एणी रजनीए कीधो रे रास।।४।।

शरद ऋतु के आश्विन के महीने (कुंवार) की पूर्णमासी की रात्रि पूर्ण कला के चन्द्रमा से प्रकाशमान थी। जिस रात्रि में वालाजी के साथ रास की लीला की।

रास तणी रे लीला कहूं, जे भरियां आपणे पाय।
निमख न कीधी रे निसरतां, कांई ततखिण तेणे रे ताय।।५।।

रास की लीला में जाने के लिए हमने ब्रज से निकलने में एक पल की भी देरी नहीं की। तुरन्त ही निकल भागे।

संझाने समें रे वेण वाईयो, कांई वृंदावन मुन्झार।
एणे ने समे सहु ऊभूं मूकियूं, तेहने आडो न आव्यो रे संसार।।६।।

जब नित्य वृन्दावन में (सन्ध्या) के समय वालाजी ने बांसुरी बजाई उसी समय हम सबने खड़े-खड़े (तुरन्त ही) संसार को छोड़ दिया (माया आड़े नहीं आई तथा किसी को कुछ नहीं समझा)।

नहीं तो कुलाहल एवडो हुतो, पण चितडां वेध्यां रे प्रमाण।
साथ सहुए रे वेण सांभल्यो, बीजो श्रवण तणो गुण जांण।।७।।

नहीं तो संसार छोड़ते समय बड़ा कोलाहल (शोर) था। हमारा चित्त वालाजी में लग गया था। हम सबने बंसी की आवाज सुनी (हमने जाना कि धनी हमें नाम ले-लेकर बुला रहे हैं)। संसार के सब जीवों ने बांसुरी की मधुर तान का ही अनुभव किया।

कोई सखी रे हुती गाय दोहती, दूध घोणियो रे हाथ माहें।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो घोणियो रे तेणे ताए।।८।।

जिस समय वृन्दावन में वालाजी ने बांसुरी बजाई, उस समय जो सखी गाय दुह रही थी, उसके हाथ से दूध का बर्तन वहीं गिर गया।

Nijanand App

कोई सखी रे काम करे घर मधे, आडो ऊभो ससरो पति जेह।
वेण सुणी ने पाटू दई निसरी, एणी दृष्टमां सरूप सनेह।। ९ ।।

कोई सखी घर में काम कर रही थी और दरवाज़े पर ससुर और पति खड़े थे। उनको भी ठोकर मारकर वह घर से निकल गई, क्योंकि उसके ध्यान में वालाजी का ही प्रेम समाया था।

कोई सखी रे वात करे पतिसूं, ऊभी धवरावे रे बाल।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो बाल तेणे ताल।। १० ।।

कोई सखी अपने पति से बात कर रही थी और खड़ी-खड़ी बालक को भी दूध पिला रही थी। बांसुरी की आवाज सुनते ही बालक उसके हाथ से छूटकर गिर गया (मोह ने सताया नहीं)।

कोई सखी रे हुती प्रीसणे, हाथ थाली प्रीसे छे धान।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गई थाली ते तान।। ११ ।।

कोई सखी अपने हाथ में थाली लेकर भोजन परोस रही थी। वालाजी की बांसुरी सुनते ही उसके हाथों से थाली गिर गई।

कोई सखी रे एणे समे निसरतां, एक पग भांणां रे मांहें।
बीजो पग पति न रुदे पर, एणी दृष्टे न आव्यूं रे कोई क्यांहें।। १२ ।।

कुछ सखियों का घर से निकलते समय एक पैर थाली में पड़ा और दूसरा पति की छाती पर, क्योंकि उन्हें कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था (सूझ नहीं रहा था)।

कोई सखी रे वेगे वछूटतां, पड्यो हडफटे ससरो त्यांहें।
आकार वहे रे घणवे उतावला, चित जई बेठूं वालाजी मांहें।। १३ ।।

कुछ सखियों के हड़बड़ाकर भागते समय रास्ते में ससुर आ गया, वह गिर पड़ा। सखियाँ जल्दी में भाग रही थीं, क्योंकि चित्त में वालाजी समा गए थे।

माता पिता रे पति सासु ससरो, रोतां न सुणियां रे बाल।
वाएने वेगे रे वछुटियो, वेण सांभलतां तत्काल।। १४ ।।

वे सखियाँ माता, पिता, पति, सास, ससुर तथा रोते हुए बच्चों की तरफ ध्यान न देकर हवा की तरह बांसुरी सुनते ही तुरन्त भाग उठीं।

वस्तर विना सखी जे नहाती, तेणे नव संभारियां रे अंग।
वेण सांभलतां रे वाला तणी, एणे वेगमां न कीधो रे भंग।। १५ ।।

जो सखियाँ बिना वस्त्र स्नान कर रही थीं उन्होंने बांसुरी की आवाज जैसे ही सुनी, तुरन्त भाग उठीं। उन्हें अपने अंगों को संभालने की भी सुध नहीं रही।

कोई सखी रे हुती नवरावती, हाथ लोटो नामे छे जल।
सुणी स्वर पड्यो लोटो अंग ऊपर, न बोलानूं चितडे व्याकुल।। १६ ।।

कोई सखी लोटा लेकर नहला रही थी, जैसे ही बांसुरी की आवाज सुनी तो हाथ से लोटा नहाने वाले के अंग पर पड़ा और वह चित्त की बेचैनी से कुछ बोल नहीं सकी।

Nijanand App

गौपद वछ रे एणे समे, सुकजीए निरधारियो ते सार।
त्राटकडे रे त्रटका करिया, कांई बंध हता जे संसार।। १७ ।।

शुकदेवजी ने संसार सागर को गाय के बछड़े के पैर (खुर) में जितनी जगह आती है, उतना छोटा सखियों के लिए हो गया, ऐसा बतलाया है, जैसे एक घास के तिनके के टुकड़े करने में कोई कष्ट नहीं होता, वैसे ही सखियों ने संसार के बन्धनों को बिना किसी कष्ट के तोड़ दिया।

संसार तणा रे काम सर्बे करतां, पण चितमां न भेद्यो रे पास।
विलंब न कीधी रे वछूटतां, ए तामसियोना प्रकास।। १८ ।।

संसार के सब काम करते हुए मन में जरा भी माया का रंग नहीं चढ़ा और वृन्दावन जाते समय संसार को छोड़ने में पलभर की भी देर नहीं की, ऐसे स्वभाव वाली तामसी सखी कहलाती है।

कोई सखी रे सिणगार करतां, सुणी तेणे वेण श्रवण।
पायना भूखण काने पहेरिया, कान तणा रे चरण।। १९ ।।

कुछ सखियां जो शृंगार कर रही थीं, उन्होंने बंसी की आवाज सुनकर उतावले में पैर के भूषण कान में पहने और कान के भूषण चरण में पहने।

एक नैणे रे अंजन करियूं, अने बीजो रह्यूं रे एम।
वेणनो स्वर सांभल्या पछी, राजसियो रहे रे केम।। २० ।।

उन्होंने एक आंख में काजल लगाया और दूसरी आंख बिना काजल के ही रह गई, बांसुरी की आवाज सुनने के बाद राजसी स्वभाव वाली सखी पीछे कैसे रह सकती है?

राजसिए रे कांइक नैणे डीठो, पण विचार करे तो थाय वेड।
तामसियो रे मोहोवड थैयो, राजसिए न मूक्यो तेहेनो केड।। २१ ।।

राजसियों ने अपनी आंख से अपने अधूरे शृंगार को देखा, यदि पूरा करने का विचार करें तो देरी होती थी। तामसियां पहले निकल चुकी थीं। राजसियों ने भी उनका पीछा नहीं छोड़ा और तुरन्त वह भी भाग निकलीं।

स्वांतसिए रे विचार करियो, तेने आडा देवराणा रे बार।
कुटम सगा रे सहु टोले मली, फरीने वल्या रे भरतार।। २२ ।।

स्वांतसी सखियां विचार करने लगीं इतने में बाहर जाने का दरवाजा बन्द कर दिया गया, सब सगे सम्बन्धी तथा पति एक साथ इकट्ठे हो गए।

त्यारे मन मांहें विचार करियो, ए कां आडा थाय दुरिजन।
ए सूं जाणे छे वर नहीं एनो वालैयो, तो जातां वारे छे वन।। २३ ।।

तब स्वांतसी सखियों ने मन में सोचा कि यह दुष्ट लोग क्यों रुकावट डाल रहे हैं? क्या यह नहीं जानते कि वालाजी हमारी आत्मा के धनी हैं और इसलिए वन में जाने से रोक रहे हैं?

धिक धिक पडो रे आ संसारने, कां न उठे रे अगिन।
विरह तामस रे भेलो थयो, त्यारे अंगडा थयां रे पतन।। २४ ।।

संसार के सगे सम्बन्धियों को स्वांतसी गोपियां धिक्कारती हैं कि इनको आग क्यों नहीं लग जाती? उनके हृदय में विरह और तामस का जोश आया और उन्होंने अपने शरीर त्याग दिए।

Nijanand App

वास्ना वहियो रे अति वेग मां, वार न लगी रे लगार।
वस्त खरी ते केम रहे वाला विना, तेणे साथ समो कीधो सिणगार।। २५ ।।

स्वांतसी सखियां भी तेजी से भागीं उन्हें जरा भी देर नहीं हुई। जो परमधाम की आत्माएं हैं, वह अपने धनी के बिना नहीं रह सकतीं। उन्होंने भी सबके साथ ही मिलकर शृंगार किए (योगमाया के तन धारण किए)।

वृजवधू कुमारकाओ नी, कही नहीं सुकजीए विगत।
ते केम संसे राखूं मारा साथने, तेनी करी दऊं जुजवी जुगत।। २६ ।।

शुकदेव मुनि ने भी ब्रजवधुओं की लड़कियों का (कुमारिकाओं का) वर्णन नहीं किया है। सुन्दरसाथ को कोई संशय न रह जाए, इसीलिए मैं उसका अलग से बयान करती हूं।

जेटली नहाती कार्तिक कुमारिका, ए वास्ना नहीं उतपन।
एनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसूं कीधो वायदो वचन।। २७ ।।

कार्तिक के महीने में जो कुमारिका सखियां स्नान करती थीं, परमधाम में उनके तन नहीं हैं। वस्त्रहरणलीला में उनकी शर्म छुड़ाने के लिए ही वस्त्रों को हरण किया और उनके मांगने पर लीला करने का वायदा किया।

जे सखी हुती कुमारका, घर नहीं तेहेना अंग।
सनेह बल दया लीधी धणीतणी, ते मलीने भली साथने रंग।। २८ ।।

जो ब्रज में कुमारिका सखियां थीं उनके परमधाम में तन नहीं हैं। उनके अटूट प्रेम के कारण ही उन पर धनी की कृपा हुई, जिससे वह भी तन छोड़कर योगमाया में ब्रह्मसृष्टियों के साथ मिल गईं।

साथ दोडे रे घणवे आकलो, मननी न पोहोंती हाम।
जोगमाया आवी सामी जुगत सों, सिणगार कीधो एणे ठाम।। २९ ।।

सब आत्माएं व्याकुल होकर दौड़ीं क्योंकि विरह के बाद मिलन की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। अब योगमाया का ब्रह्माण्ड सामने आ गया, इसलिए सबने कालमाया के तनों को छोड़कर योगमाया के नए शृंगार किए (तन धारण किए)।

सुणोजी साथ कहे इंद्रावती, जोगमाया नो जुओ विचार।
ए केणी पेरे हूं वरणवुं, मारा साथ तणो सिणगार।। ३० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी! (हे जयराम भाई) अब योगमाया का विचार करके देखो, मैं अपने सुन्दरसाथ के शृंगार का किस तरह से वर्णन करूं?

वचन धणी तणां में साभल्यां, मारा गजा सारूं रे प्रमाण।
एक स्यामाजीने वरणवुं, बीजो साथ सकल एणी पेरे जाण।। ३१ ।।

श्री जयराम भाई को समझाते हुए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हवसा में मैंने धनी के मुखारबिन्द से जो सुना और अपनी बुद्धि के अनुसार ग्रहण किया है, उसी के अनुसार केवल श्री श्यामाजी के शृंगार का वर्णन करती हूं। बाकी सब सुन्दरसाथ का भी शृंगार ऐसा ही समझना।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १८४ ।।

Nijanand App